संगीत समारोहों में सांगीतिक संस्थाओं की भूमिका

ऋचा वर्मा
शोधार्थी
संगीत विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
ईमेल : richaverma220500@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

ऋचा वर्मा

संगीत समारोहों में सांगीतिक संस्थाओं की भूमिका

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 2,
Article No. 21 pp. 148-153

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

भारतीय संगीत, संगीत–शास्त्र, स्वर–विज्ञान और संगीतकार हमारी धरोहर है। इनमें से किसी एक के भी अभाव होने पर संगीत जगत में एक अधूरापन प्रतीत होता है। एक समय वह था जब संगीत के आयोजनों का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिकता और मनोरंजन मात्र था। किंतु आज यह मनुष्य के जीवन निर्वहन का साधन भी बन गया है, जिसमें संगीत समारोहों ने अहम भूमिका निभाई है।

वैदिक काल से ही भारतीय संगीत में संगीत समारोहों की परंपरा चली आ रही है। जिसे समज्जा के नाम से जाना जाता था। वर्तमान में इन्हें समारोह अथवा सम्मेलन के नाम से संबोधित किया जाता है। वर्तमान तथा भविष्य में भारतीय शास्त्रीय संगीत की धरोहर के संरक्षण में संगीत समारोहों की अहम भूमिका है। वैदिक युग से वर्तमान युग तक संगीत समारोहों ने बहुत से कलाकारों को उनकी कला के माध्यम से संरक्षण प्रदान किया है तथा उनके जीवन निर्वहन का मार्ग प्रशस्त किया है। इन समारोहों ने उत्सवों, त्यौहारों से दरबारी सांगीतिक स्वरूप (हवेली संगीत) एवं घराने की सीमा से उठकर, वर्तमान में संगीत समारोहों तक की यात्रा तय की है।

सर्वप्रथम संगीत जगत के चतुर पंडित ''भातखण्डे'' जी के प्रयास से पांच विशाल अखिल भारतीय संगीत सम्मेलनों का आयोजन किया गया था जो बड़ौदा, दिल्ली, बनारस, लखनऊ में आयोजित हुए थे। संगीत के विकास में यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी जिसमें बहुत से उस्तादों, संगीतज्ञों, कलाकारों को एक साथ एक मंच मिला, जहां उन सभी ने साथ मिलकर विभिन्न रागों के स्वरूप, बंदिशों, स्वरलिपियों का प्रदर्शन कर संगीत के शिक्षण और प्रचार–प्रसार हेतु अपने–अपने विचार प्रकट किए।

वर्तमान समय में संगीत कलाकारों ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है वह इन्हीं संगीत सम्मेलनों, समारोहों, संगीत गोष्ठियों, म्यूजिक क्रान्फ्रेंसो, संगीत सेमीनार, वेबीनार आदि भातखंडे जी द्वारा आयोजित इन अखिल भारतीय सम्मेलन का ही बेहतरीन परिणाम है। संगीत कला के उत्थान एवं प्रचार–प्रसार में संगीत समारोह की महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान समय में विभिन्न संगीतिक संस्थाओं द्वारा संगीत कला के उत्थान के लिए विविध कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं।

इन संस्थाओं को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है। पहले वर्ग में सरकारी संगीत संस्थान जिसके अंतर्गत मानव संसाधन विकास मंत्रालय, संगीत नाटक अकादमी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, स्पीक मैके, नेशनल सेंटर फॉर दी परफॉर्मिंग आर्ट्स, संगीत शोध संस्थान, केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय आदि सम्मिलित है और दूसरे वर्ग में निजी संगीत संस्थान जिसके अंतर्गत कल्याण गायन समाज (महाराष्ट्र), उत्कल संगीत समाज (कटक, ओडीशा), सरस्वती संगीत विद्यालय (बैंगलोर, कर्नाटक), संगीत महाविद्यालय राष्ट्रीयशाला (राजकोट, गुजरात), नेशनल म्यूजिक ऐसोसियशन (कटक, ओडीशा), सुरसिंगार परिषद् (मुंबई, महाराष्ट्र), प्राचीन कला केंद्र (चंडीगढ़), उस्ताद अलाउद्दीन खाँ अकादमी (मध्य प्रदेश), कलाकारों की बैठक (मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश) आदि संस्थाए सम्मिलित हैं। यह संस्थाएं निम्नवत है –

आकाशवाणी

भारत में सर्वप्रथम आकाशवाणी ने ही संगीत कलाकारों को मंच प्रदान किया। शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, भक्ति संगीत, चित्रपट संगीत के अनुसार वर्ग विभाजन कर उनका प्रशिक्षण किया गया और उनकी श्रेणियां TOP RANK ARTIST, A GRADE ARTIST , B HIGH GRADE ARTIST , B GRADE ARTIST आदि श्रेणियां निर्धारित की गई । इससे जनमानस को मनोरंजन का साधन मिला साथ ही सरकार को भी अपनी नीतियां प्रचारित प्रसारित करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की समस्त प्रसारण सेवा आकाशवाणी के माध्यम से की जाने लगी। ऑल इंडिया रेडियो की गतिविधियों को संगीत प्रसारण के क्षेत्र में निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है–

- भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचार–प्रसार

- नया ऑडिशन सिस्टम
- रेडियो संगीत सम्मेलन
- संगीत कक्षाए
- अखिल भारतीय संगीत कार्यक्रम
- भारतीय संगीत पर परिचर्चाऐं
- संगीत स्वभाव का सम्मेलनों का प्रसारण
- ऑल इंडिया रेडियो की सांगीतिक प्रतियोगिताए
- शास्त्रीय संगीत का दैनिक प्रसारण
- रविवासरीय संगीत सभा
- संगीत परिचर्चा

आकाशवाणी द्वारा अनेक संगीत सम्मेलनों के प्रसारण से भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्रचारित प्रसारित किया जा रहा है तथा भविश्य के लिए संरक्षित किया जा रहा है।

दूरदर्शन

विश्व की प्रत्येक गतिविधि को जनमानस तक पहुंचने में दूरदर्शन की अहम भूमिका रही है। संगीत के प्रचार प्रसार में यह वरदान के रूप में सिद्ध हुआ है। समय–समय पर दूरदर्शन संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसमें देश के प्रसिद्ध कलाकार गायन वादन एवं नृत्य की प्रस्तुतियां देते हैं। इसके अतिरिक्त अनेको कार्यक्रम जो संगीत शिक्षक को व संगीत कला को सशक्त रूप प्रदान करते हैं वह भी दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन में श्रव्य के साथ–साथ दृश्य पक्ष भी सबल और प्रभावी होता है। आकाशवाणी के साथ–साथ दूरदर्शन भी जनसंचार का सशक्त माध्यम है। दूरदर्शन द्वारा शास्त्रीय संगीत के घरानेदार कलाकारों को प्रत्यक्ष रूप से देखने व सुनने का सुलभ अवसर प्राप्त होता है।

धारावाहिक 'साधना' श्रृंखला ने संगीतज्ञों व सामान्य जनमानस के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का कार्य किया। इसको तेरह श्रृंखलाओं में प्रसारित किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध कलाकारों–उस्ताद बिस्मिल्लाह खान (शहनाई वादक), पंडित जसराज (गायक), जाकिर हुसैन (तबला वादक), गंगूबाई हंगल (गायिका), परवीन सुल्ताना (गायिका), हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी वादक), किशन महाराज (तबला वादक) आदि कलाकारों के जीवन शैली, अभ्यास विधि, संगीत शिक्षण प्रणाली एवं शैलीगत विशेषताओं को दर्शाया गया। धारावाहिक 'ध्वनि' भी शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रम रहा जिसमें ख्याति प्राप्त कलाकारों के अलावा अन्य कलाकार, जो लोकप्रिय नहीं हो पाए, उन्हें भी प्रस्तुति देने का अवसर प्रदान किया गया। बीते कुछ वर्षों में संगीत समारोहो व सम्मेलनों का प्रसारण दूरदर्शन द्वारा किया जाता है।

संगीत नाटक अकादमी

संगीत कला, नृत्य कला एवं नाट्य कला के विकास हेतु संगीत नाटक अकादमी की स्थापना की गई थी। इस संस्था ने जहां एक ओर कलाकारों को प्रोत्साहित किया एवं संरक्षण प्रदान किया वहीं दूसरी ओर नवयुवकों एवं युवतियों में इस कला के प्रति रूझान पैदा कर भविष्य में विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से तैयार किया। संगीत कला के प्रति समर्पण एवं सेवा–भावना रखने वाले कलाकारों को

उनकी कला के प्रोत्साहन हेतु संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जाता है। समय–समय पर यह अकादमी कलाकारों को सहायता–राशि भी प्रदान करती है।

इस संस्था के द्वारा देश–विदेश में संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथा यह संस्था राश्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संगीत उत्सव, संगीत समारोह, नृत्य समारोहों का भी आयोजन करती है। जिसके अंतर्गत संगीत सभा, संगीत कार्यशालाएं, मंच प्रदर्शन, संगीत गोष्ठियां आदि सम्मिलित हैं। इसमें कलाकारों को मंच प्रदान कर अपनी पहचान बनाने का और अपनी कला के प्रदर्शन द्वारा जनमानस के हृदय में अपनी छाप छोड़ने का एक अवसर दिया जाता है। इसके अतिरिक्त संगीत नाटक अकादमी द्वारा बहुत से समारोहों का आयोजन भी किया जाता है, जिसके अंतर्गत संगीत प्रतिभा समारोह, संगीत संगम समारोह, बृहद्देशीय महोत्सव आदि सम्मिलित हैं।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का गीत एवं नाट्य विभाग संगीत के उत्थान में अत्यंत प्रभावकारी सिद्ध हुआ है।

मानव–संसाधन विकास मंत्रालय

आधुनिक समय में इस संस्थान के संस्कृति विभाग द्वारा बहुत सी योजनाएं चलाई जा रही है, जो इस प्रकार है– सांस्कृतिक परिसरों की स्थापना के लिए वित्तीय सहायता योजना, साहित्य कला और जीवन के अन्य क्षेत्रों में अभाव का जीवन निर्वाह करते प्रतिष्ठित कलाकारों एवं उन पर आश्रितों के लिए वित्तीय सहायता योजना, विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्र के युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति प्रदान करने संबंधित योजना, शोध परियोजनाओं, सेमिनारों के आयोजन तथा सांस्कृतिक संगठनों के विकास हेतु वित्तीय सहायता योजना आदि। इस प्रकार से बहुत सी योजनाएं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही है जिसका उद्देश्य संगीत कला के साथ–साथ अन्य कलाओं को भी प्रोत्साहित करना साथ ही संगीत समाज, साहित्य व संस्कृति की उन्नति करना है।

स्पीक मैके

इस संस्था का पूर्ण नाम Society for Promotion of Indian Classical Music and Culture Amongst Youth है। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य युवाओं को भारतीय संगीत व संस्कृति से जोड़ना एवं उसके प्रति जागरूकता पैदा करना है तथा इस कला के माध्यम से युवाओं का चरित्र निर्माण करना, नैतिक उत्कृष्टता एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करना है। इस संस्था के अंतर्गत विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में व्याख्यान प्रदर्शन, योग कला शिविर, लोककला, संगीत उत्सवों, बैठको आदि का आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष इस संस्था द्वारा राज्य स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तरीय सम्मेलनों का आयोजन भी किया जाता है।

'नेशनल सेंटर फॉर दी परफॉर्मिंग आर्ट्स'

इस संस्था की स्थापना 1 जनवरी सन् 1976 में हुई, जो कि मुंबई में स्थापित है। इस केन्द्र में प्रसिद्ध कलाकारों की ऑडियो रिकॉर्डिंग को संग्रहित कर संग्रहालय में सुरक्षित रखा जाता है। जिससे संगीत कला के प्रेमी, छात्र–छात्राओं को इसके श्रवण मात्र से आनंद की अनुभूति हो सके। यह संस्था गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं में से एक है।

संगीत शोध संस्थान, कोलकाता

इस संस्था को संगीत रिसर्च अकादमी के नाम से भी संबोधित किया जाता है, यह संस्था कोलकाता में स्थापित है। गुरुकुल शिक्षण प्रणाली इस संस्था की विशेषता है। यह एकमात्र ऐसी संगीत संस्था है जहां विभिन्न घरानों के कलाकार उसी जगह पर निवास कर शिष्यों को इस कला साधना से परिचित करवा रहे हैं। इस संस्थान की एक शाखा संगीत के शोध कार्यों में वैज्ञानिकता व विशिष्टता प्रदान करने के साथ–साथ प्रतिवर्ष शास्त्रीय संगीत से संबंधित सेमिनारों का आयोजन भी करती है। जहां संगीत के शास्त्रात्मक व क्रियात्मक दोनों पक्षों के विद्वजन, शिक्षक, विद्यार्थी एवं शोधार्थी एक साथ एकत्र होते हैं। युवा पीढ़ी को संगीत कला से जोड़ने व भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु इस संस्था द्वारा संगीत उत्सव भी आयोजित किए जाते हैं, जिसके अंतर्गत मल्हार उत्सव, आई०टी०सी० यंग मेस्ट्रोस, आई०टी०सी० संगीत सम्मेलन, अरपन आदि समारोह सम्मिलित है। यह संस्थान पुरस्कार के रूप में प्रत्येक वर्ष ITC AWARD तथा [1] 10,000/– धनराशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान करता है।

प्रयाग संगीत समिति

यह संस्था संगीत शिक्षा की एक राष्ट्रव्यापी संस्था है। इसकी स्थापना सन् 1926 में प्रयागराज में हुई। यह संस्था शास्त्रीय संगीत में शिक्षा प्रदान कर डिप्लोमा और प्रमाणपत्र प्रदान करता है। प्रयाग संगीत समिति का प्रथम संगीत सम्मेलन 1927 में मुंशी रामप्रसाद की बगिया, मुट्ठीगंज में आयोजित हुआ था जिसमें संगीत जगत के महान संगीतज्ञ पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने अपने गायन की स्वर लहरियों में गोते लगाए थे। इस सम्मेलन में देश के बड़े–बड़े कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी थी। यह परिवर्तन का पहला पड़ाव था। इस सम्मेलन को आर्थिक रूप में भी काफी लाभ पहुंचा। इलाहाबाद में संगीत सम्मेलनों में कलाकारों के प्रोत्साहन के लिए अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता भी आयोजित की जाती है, जिसमें देश के प्रत्येक क्षेत्र के कलाकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने हेतु प्रतिभाग करने आते हैं। यह परंपरा आज भी विद्यमान है।

कलाकारों की बैठक

इसका आयोजन मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) में किया जाता है। इसमें कलाकारों द्वारा सूफी गायन, लोक संगीत, पारंपरिक संगीत का प्रदर्शन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य गायक, वादक, नृतक, हास्य अभिनेता एंव नवयुवक युवतियों को अपनी कला के प्रदर्शन हेतु मंच प्रदान करना है।

केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

केंद्र सरकार की ओर से केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा 10 दिवसीय हुनर हाट कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इसमें लगभग 30 राज्यों के कारीगर, शिल्पकार व दस्तकार भाग लेते हैं। हुनर हाट में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं जिसमें दूर–दूर से प्रतिभागी अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। इस 10 दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय उत्पादन व हस्तशिल्प कला को बढ़ावा देना है। इसमें देश की विशेष चीजों को बेहतर ढंग से जनमानस के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। यहां ख्याति प्राप्त कलाकारों को जिसमें रामपुर सदारंग परंपरा के उस्ताद सखावत हुसैन खान साहब, उस्ताद उस्मान खान नियाजी, लोक गायिका मालिनी अवस्थी, मैथिली ठाकुर, फिल्मी जगत के जाने माने गायक कुमार सानू, विनोद राठौर आदि प्रमुख कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है। इसमें छात्र–छात्राओं, शिक्षक–शिक्षिकाओं व कवि सम्मेलन कलाकार, कव्वाल गायक, गायन वादन के कलाकारों को उनकी कला के प्रदर्शन हेतु एक मंच प्रदान किया जाता है।

इसके अतिरिक्त MHRD तथा NCERT के संयुक्त प्रयास से संगीत की ई–शिक्षण–प्रणाली से सोशल –साइंस, फाइन–आर्ट्स सहित कुल 70 विषयों पर सर्वोत्तम इंटरैक्टिव पाठ्यक्रम को डिजिटल फॉर्म में तैयार किया गया है। जिसके अंतर्गत ई –पाठशाला के कुछ आवश्यक तत्वों को संग्रहित किया गया है। इन सभी तथ्यों को जनमानस तक पहुंचने में स्वयंप्रभा का फ्री डी०टी०एच० चौनल तथा एनसीईआरटी के यूट्यूब चौनल माध्यम बने। शोधार्थियों की सहायता के लिए शोध–गंगा, शोध –गंगोत्री, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी, संगीत गैलेक्सी, मूक आदि प्लेटफार्म द्वारा इंटरनेट के माध्यम से मानदंडों को स्थापित किया गया। इस प्रकार से कई संस्थाएं संगीत के प्रचार–प्रसार में अपनी अहम भूमिका निभा रही हैं।

इस प्रकार से विभिन्न सरकारी संस्थानों एवं निजी संस्थानों द्वारा संगीत समारोह आयोजित किए जाते हैं। जिनका उद्देश्य भारतीय शास्त्रीय संगीत कला व संस्कृति को सुरक्षित रखना तथा उसका प्रचार प्रसार करना है। इसके अतिरिक्त संगीत शिक्षण को सुव्यवस्थित व नियमित स्वरूप प्रदान करना, संगीत को अन्य विषयों के समकक्ष लाना, तथा संगीत कला को समाज में पुनः प्रतिष्ठा व सम्मान दिलाना है। यह कला कलाकार को आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चयी बनाती है तथा कलाकारों के अर्थोपार्जन का साधन भी है।

प्रस्तुत विषय के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि भविष्य के लिए संगीत कला को संरक्षित रखने में संगीत समारोहों की अहम भूमिका है। संगीत समारोह की विशाल गौरवशाली परंपरा में संगीतिक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बसंत. मंच प्रदर्शन एवं संगीत समारोह. पृष्ठ **718, 719.**
2. शर्मा, संगीता. भारतीय संगीत के विकास हेतु प्रशासन तंत्र की भूमिका. पृष्ठ **267, 268, 395.**
3. श्रीवास्तव, गिरीशचंद्र. (2012). ''संगीत सम्मेलनों की परंपरा (इलाहाबाद के विशेश संदर्भ में). संगीत पत्रिका. अक्टूबर. पृष्ठ **35, 40.**
4. श्रीवास्तव, रानी. (2008). संगीत के प्रचार प्रसार में दूरदर्शन का योगदान. संगीत पत्रिका. अगस्त. पृष्ठ **39, 40.**
5. इंटरनेट से प्राप्त जानकारी अनुसार।